No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

03144

दिसम्बर, 2016

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष किन्हीं ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

   (क) जात ले जात, टके सेर जात । एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं । टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जाएँ और धोबी को ब्राह्मण कर दें, टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें । टके के वास्ते झूठ को सच करें । टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिंदू से क्रिस्तान । टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें । टके के वास्ते पाप को पुण्य मानें, टके के वास्ते नीचे को भी पितामह बनावें । वेद धर्म कुल-मरजादा सचाई-बड़ाई सब टके सेर ।

(ख) किसलिए ? त्रस्त प्रजा की रक्षा के लिए, सतीत्व के सम्मान के लिए, देवता-ब्राह्मण और गौ की मर्यादा में विश्वास के लिए, आतंक से प्रकृति को आश्वासन देने के लिए – आपको अपने अधिकार का उपयोग करना होगा । युवराज ! इसीलिए मैंने कहा था कि आप अपने अधिकारों के प्रति उदासीन हैं, जिसकी मुझे बड़ी चिंता है । गुप्त-साम्राज्य के भावी शासक को अपने उत्तरदायित्व का ध्यान नहीं ।

(ग) मुझे उस असलियत की बात करने दीजिए जिसे मैं जानती हूँ ।... एक आदमी है । घर बसाता है । क्यों बसाता है ? एक ज़रूरत पूरी करने के लिए । कौन-सी ज़रूरत ? अपने अंदर के किसी उसको... एक अधूरापन कह लीजिए उसे... उसको भर सकने की । इस तरह उसे अपने लिए... अपने में... पूरा होना होता है । किन्हीं दूसरों को पूरा करते रहने में ही ज़िंदगी नहीं काटनी होती । पर आपके महेंद्र के लिए ज़िंदगी का मतलब रहा है... जैसे सिर्फ़ दूसरों के ख़ाली खाने भरने की ही एक चीज़ है वह । जो कुछ वे दूसरे उससे चाहते हैं, उम्मीद करते हैं... या जिस तरह वे सोचते हैं उनकी ज़िंदगी में उसका इस्तेमाल हो सकता है ।

(घ) संस्कृति थी यह एक बूढ़े और अंधे की
जिसकी संतानों ने
महायुद्ध घोषित किए,
जिसके अंधेपन में मर्यादा
गलित-अंग वेश्या-सी
प्रजाजनों को भी रोगी बनाती फिरी
उस अंधी संस्कृति,
उस रोगी मर्यादा की
रक्षा हम करते रहे
सत्रह दिन ।

(ङ) धोखा खाने वाला मूर्ख और धोखा देने वाला ठग क्यों कहलाता है ? जब सब कुछ धोखा ही धोखा है, और धोखे से अलग रहना ईश्वर की भी सामर्थ्य से दूर है, तथा धोखे ही के कारण संसार का चर्खा पिन्न-पिन्न चला जाता है, नहीं तो ढिच्चर-ढिच्चर होने लगे, बरंच रही न जाय तो फिर इस शब्द का स्मरण वा श्रवण करते ही आप की नाक-भौंह क्यों सुकुड़ जाती है ?

2. प्रहसन के रूप में 'अंधेर नगरी' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' के आधार पर जयशंकर प्रसाद की नाट्य-दृष्टि का विवेचन कीजिए । *16*

4. 'आधे अधूरे' के नाट्य-शिल्प पर विचार कीजिए । *16*

5. 'अंधा युग' के कथ्य का विश्लेषण कीजिए । *16*

6. एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'ताँबे के कीड़े' एकांकी का विवेचन कीजिए । *16*

7. 'धोखा' निबंध की भाषा और शिल्प पर प्रकाश डालिए । *16*

8. 'किन्नर देश की ओर' की विशेषताएँ बताइए । *16*

9. रेखाचित्र के रूप में 'ठकुरी बाबा' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

    (क) 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' का महत्त्व

    (ख) 'वसंत का अग्रदूत' का संरचनात्मक वैशिष्ट्य

    (ग) कलम का सिपाही

    (घ) हरिशंकर परसाई के लेखन में व्यंग्य